अविरल धार से सात नदियों के प्रदूषण पर वार

दैनिक जागरण, नई दिल्ली, दिनांक: 04.05.2020

जागरण संवाददाता, कानपुर: सात नदियों की धारा निर्मल करने के लिए आइआइटी कानपुर, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ और अन्य संस्थाएं अब अविरलता पर फोकस करेंगी। पहले चरण में गंगा, गोमती, राप्ती, घाघरा, शारदा, चंबल और बेतवा नदियों में न्यूनतम धारा (मिनिमम फ्लो) तय कराएंगे। बहता पानी विकार दूर करता जाएगा। इससे जल स्तर संतुलित रहेगा। विशेषज्ञ नदियों की न्यूनतम धारा का निर्धारण करेंगे। शोध की रिपोर्ट जल शक्ति मंत्रालय को देकर बतांएगे कि कहां कितना पानी छोड़ा जाए।

विशेषज्ञ 16 साइटों पर काम करेंगे। वहां के पानी के नमूने लिए जाएंगे। घुलित ऑक्सीजन, बायोकैमिकल ऑक्सीजन डिमांड, पीएच वैल्यू देखी जाएगी। पानी में कितना फीसद मल और अन्य ऑर्गेनिक कचरा है। क्रोमियम, आर्सेनिक, मैग्नीशियम और अन्य मेटल हैं। उन पर जल की धारा का क्या असर होता है। बारिश या गर्मियों में स्थिति क्या रहती है। इन सभी की पड़ताल की जाएगी।

आइआइटी डिपार्टमेंट ऑफ अर्थ साइंस के प्रो. राजीव सिन्हा ने कहा कि सातों नदियों पर विस्तृत शोध किया जाएगा। पांच पर काम शुरू है। मिनिमम फ्लो के निर्धारण से नदियों का प्राकृतिक स्वरूप बना रहेगा। कई संस्थाएं मिलकर काम करेंगी।

मिनिमम फ्लो के निर्धारण से बांध या अन्य स्रोतों से इतना पानी छोड़ा जा सकेगा, जिससे नदियों का अपना स्वरूप प्रभावित नहीं होगा। पूरे साल नदियों की धारा अविरल बहेगी। अभी सिंचाई विभाग, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड पानी कम छोड़ने या न छोड़ने का आरोप लगाते हैं।